पाठ 15

मिट्ठू

आइए सीखें –

● मित्रता की भावना ● पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम और संवेदना ● मनोरंजन के पुराने साधनों से परिचय ● क्रिया का ज्ञान, वचन और वाक्य रचना की समझ।

बन्दरों के तमाशे तो तुमने बहुत देखे होंगे। मदारी के इशारों पर बन्दर कैसी–कैसी नकल करता है, उसकी शरारतें भी तुमने देखी होगी। तुमने उसे घरों से कपड़े उठाकर भागते देखा होगा। पर आज हम तुम्हें एक ऐसा हाल सुनाते हैं, जिससे मालूम होगा कि बन्दर लड़कों से दोस्ती भी कर सकता है।

कुछ दिन हुए लखनऊ में एक सरकस कम्पनी आई थी। उसके पास शेर, भालू, चीता और कई तरह के और भी जानवर थे। इनके साथ एक बन्दर मिट्ठू भी था। लड़कों के झुण्ड के झुण्ड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिट्ठू ही उन्हें सबसे अच्छा लगता। उन्हीं लड़कों में गोपाल भी था। वह रोज आता और मिट्ठू के पास घण्टों चुपचाप बैठा रहता। उसे शेर, भालू, चीते आदि से कोई प्रेम न था। वह मिट्ठू के लिए घर से चने, मटर, केले लाता और खिलाता। मिट्ठू भी उससे इतना हिल गया था कि बगैर उसके खिलाए कुछ न खाता। इस तरह दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई।

एक दिन गोपाल ने सुना कि सरकस कम्पनी वहाँ से दूसरे शहर में जा रही है। यह सुनकर उसे बड़ा रंज हुआ। वह रोता हुआ अपनी माँ के पास आया और बोला– 'अम्मा, मुझे एक अठन्नी दो, मैं जाकर मिट्ठू को खरीद लाऊँ। वह न जाने कहाँ चला जाएगा फिर मैं उसे कैसे देखूँगा? वह भी मुझे न देखेगा तो रोएगा।''

शिक्षण संकेत – ● कहानी का हाव–भाव के साथ वाचन करें। ● पाठ में आए विरामचिह्नों, मुहावरों और उर्दू के शब्दों को उदाहरण सहित समझाएँ। ● छात्रों को इस कहानी का अभिनय करने को कहें। ● बच्चों को यह बताएँ कि अब जीवों के प्रति क्रूरता रोकने के लिए सरकस में तथा मदारी के तमाशे में बन्दर, भालू आदि का प्रदर्शन कानूनी रूप से प्रतिबन्धित है। ● शिक्षक बच्चों को बताएँ कि जब यह कहानी लिखी गई थी तब अठन्नी का मूल्य अधिक था। वर्तमान में अठन्नी को पचास पैसे के रूप में जानते हैं।

माँ ने समझाया– ''बेटा, बन्दर किसी को प्यार नहीं करता। वह तो बड़ा शैतान होता है। यहाँ आकर सबको काटेगा, मुफ्त में उलाहने सुनने पड़ेंगे।''

लेकिन लड़के पर माँ के समझाने का कोई असर न हुआ। वह रोने लगा। आखिर माँ ने मजबूर होकर उसे एक अठन्नी दे दी।

अठन्नी पाकर गोपाल मारे खुशी के फूल उठा। उसने अठन्नी को मिट्टी में मलकर खूब चमकाया, फिर मिट्ठू को खरीदने चला। लेकिन मिट्ठू वहाँ दिखाई न दिया। गोपाल का दिल भर आया– मिट्ठू कहीं भाग तो नहीं गया? मालिक को अठन्नी दिखाकर गोपाल बोला– ''क्यों साहब, मिट्ठू को मेरे हाथ बेचेंगे?''

मालिक रोज उसे मिट्ठू से खेलते और खिलाते देखता था। हँसकर बोला – ''अबकी बार आऊँगा तो मिट्ठू को तुम्हें दे दूँगा।''

गोपाल निराश होकर चला आया और मिट्ठू को इधर–उधर ढूँढने लगा। वह उसे ढूँढने में इतना मग्न था कि उसे किसी बात की खबर न थी। उसे बिल्कुल न मालूम हुआ कि वह चीते के कठघरे के पास आ गया था। चीता भीतर चुपचाप लेटा था। गोपाल को कठघरे के पास देखकर उसने पंजा बाहर निकाला और उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा। गोपाल तो दूसरी तरफ ताक रहा था। उसे क्या खबर थी कि चीते का तेज पंजा उसके हाथ के पास पहुँच गया है। वह इतना करीब था कि चीता उसका हाथ पकड़कर खींच ले कि मिट्ठू न

मालूम कहाँ से आकर उसके पंजे पर कूद पड़ा और पंजे को दाँतों से काटने लगा। चीते ने दूसरा पंजा निकाला और उसे ऐसा घायल कर दिया कि वह वहीं पर गिर पड़ा और जोर–जोर से चीखने लगा।

मिट्ठू की यह हालत देखकर गोपाल भी रोने लगा। दोनों का रोना सुनकर लोग दौड़े, उन्होंने देखा कि मिट्ठू बेहोश पड़ा है और गोपाल रो रहा है। मिट्ठू का घाव तुरन्त धोया गया और मरहम लगवाया गया। थोड़ी देर में उसे होश आ गया। वह गोपाल की ओर प्यार से देखने लगा, जैसे कह रहा हो कि अब क्यों रोते हो? मैं तो अच्छा हो गया।

कई दिन मिट्ठू की मरहम पट्टी होती रही और आखिर वह बिल्कुल अच्छा हो गया। गोपाल अब रोज आता और उसे रोटियाँ खिलाता।

आखिर कम्पनी के चलने का दिन आया। गोपाल बहुत रंजीदा था। वह मिट्ठू के कठघरे के पास खड़ा आँसू–भरी आँखों से देख रहा था कि मालिक ने आकर कहा–''अगर तुम मिट्ठू को पा जाओ तो क्या करोगे?''

गोपाल ने कहा– ''मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा, उसके साथ–साथ खेलूँगा, उसे अपनी थाली में खिलाऊँगा, और क्या!''

मालिक ने कहा– ''अच्छी बात है, मैं, तुमसे अठन्नी लिये बिना ही इसे तुम्हें देता हूँ।''

गोपाल को जैसे कोई खजाना मिल गया। उसने मिट्ठू को गोद में उठा लिया, पर मिट्ठू नीचे कूद पड़ा और उसके पीछे–पीछे चलने लगा। दोनों खेलते–कूदते घर पहुँच गए।

मुंशी प्रेमचन्द

मुंशी प्रेमचन्द जी का जन्म सन् 1880 (अठारह सौ अस्सी) ई. में लमही वाराणसी में हुआ था। इन्होंने हिन्दी तथा उर्दू में लगभग तीन सौ कहानियाँ तथा अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की। ये कहानी और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध है। इनका निधन सन् 1936 (उन्नीस सौ छत्तीस) ई. में हुआ।

शब्दार्थ–

शरारत– शैतानी। झुण्ड–समूह, दल। तमाशे– प्रदर्शन, करतब। मदारी– पशु पक्षियों का खेल दिखाने वाला, (डमरू ढोलक, बाँसुरी बजाकर तमाशा दिखाने वाला)। सरकस कम्पनी– तमाशा दिखाने वाले लोगों का समूह। रंज– दुःख। उलाहना – शिकायत। खुशी से फूल उठना – बहुत प्रसन्न होना। दिल भर आना – दुःखी होना। मग्न– मगन, लीन। रन्जीदा– उदास, दुःखी। आँसू भरी आँखें– रोना।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) सरकस कम्पनी किस शहर में आई थी?

(ख) गोपाल और दूसरे लड़कों को कौन सा जानवर अच्छा लगता था?

(ग) गोपाल और मिट्ठू आपस में मित्र कैसे बन गए?

(घ) गोपाल चीते के कठघरे के पास कैसे पहुँच गया?

(ङ) मिट्ठू कैसे घायल हो गया?

(च) गोपाल प्रसन्न क्यों था?

2. कोष्टक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) अठन्नी पाकर ––––––– मारे खुशी के फूल उठा। (गोपाल/मिट्ठू)

(ख) मिट्ठू नाम का एक ––––––– था। (तोता/बन्दर)

(ग) कुछ दिन हुए ––––––– में एक सरकस कम्पनी आई थी। (आगरा/लखनऊ)

(घ) माँ ने मजबूर होकर उसे एक –––––– दे दी। (चवन्नी/अठन्नी)

(ङ) अबकी बार आऊँगा तो ––––––– तुम्हें दे दूँगा। (भालू/मिट्ठू)

3. किसने किससे कहा लिखिए–

कथन	किसने कहा	किससे कहा
बेटा, बन्दर किसी को प्यार नहीं करता।		
क्यों साहब मिट्ठू को मेरे हाथ बेचोगे।		
अगर तुम मिट्ठू को पा जाओ तो क्या करोगे?		

(क) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए– कम्पनी, मिट्ठू, मरहम, आँसू

(ख) कैसी–कैसी शब्दों में योजक चिह्न का प्रयोग हुआ है। इस पाठ में से योजक चिह्न के प्रयोग वाले शब्द छाँटकर लिखिए।

पढ़िए और समझिए

रोता है, जाता है, खाता है, हँसता है, पढ़ता है।

यहाँ – रोता, जाता, खाता, हँसता, पढ़ता शब्दों से किसी काम का करना या होना समझा जाता है।

अब जानिए –

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पता चले, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे– राम पुस्तक पढ़ता है। इसमें ''पढ़ता'' शब्द से पढ़ने के काम का होना या करना पता चलता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया पद के नीचे रेखा खींचिए–

उदा. (क) राम घर <u>जाता</u> है।

(ख) सीता गाना गाती है।

(ग) सोहन गेंद से खेलता है।

(घ) राधा नाचती है।

5. निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन और बहुवचन शब्द अलग–अलग कीजिए–

लड़का, गाय, आँखें, बन्दरों, लड़के, गायें, आँख, बन्दर, ग्वाला, ग्वाले

एकवचन	बहुवचन
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

6. **निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम से (प्रथम वर्ण देखकर) लिखिए–**

गोपाल, क्षेत्र, बन्दर, चिड़िया, शेर, सरकस

7. **वाक्यांश को उसके सामने दिए गये वाक्य में जोड़कर लिखिए–**

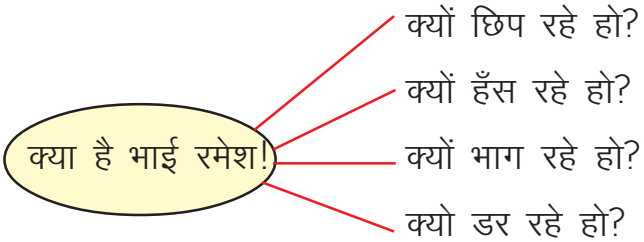

योग्यता विस्तार

- अगर आपके गाँव/शहर में या आसपास कोई सरकस आए तो उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
- जानवरों के प्रति प्रेम और मित्रता व्यक्त करने वाली अन्य कहानियाँ या प्रसंग पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।
- पशु पक्षियों से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़िए और उनके भोजन, निवास स्थान तथा प्रवृत्तियों को समझिए।
- आपस में चर्चा कीजिए कि मुक्त रहने वाले पशु–पक्षियों को पालतू बनाकर पिंजड़े में बन्द रखना क्यों ठीक नहीं है?